

‘काव्य शोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते’ अर्थात् काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्मों को अलंकार कहते हैं। अलंकार का शाब्दिक अर्थ है—आभूषण या गहना; जैसे—स्त्री पुरुष अपने सौंदर्य को बढ़ाने के लिए आभूषण धारण करते हैं, उसी प्रकार साहित्य में अभिव्यक्ति को सुंदरतर, प्रभावी और चमत्कारी बनाने के लिए अलंकारों का प्रयोग किया जाता है।

‘शब्दार्थो सहितो काव्यम्’ अर्थात् शब्द और अर्थ से युक्त होकर ही काव्य निष्पन्न होता है। इसका अर्थ है कि शब्द के माध्यम से जब अर्थ की अभिव्यक्ति सत्यम् शिवम्, सुंदरम् की भावना से संपृक्त होती है, तभी वह काव्य कहलाती है। यही कारण है कि अलंकारों के दो भेद होते हैं—शब्दालंकार और अर्थालंकार।

शब्दालंकार

विशिष्ट शब्दों के प्रयोग से काव्य के सौंदर्य में जब वृद्धि हो तो वहाँ शब्दालंकार माना जाता है। शब्दालंकारों में प्रयुक्त शब्द का स्थान उसका पर्याय नहीं ले सकता है। इनमें चमत्कार का कारण विशेष शब्द होता है, इसलिए इन्हें शब्दालंकार कहते हैं।

मुख्य शब्दालंकार हैं—

1. अनुप्रास 2. यमक 3. श्लेष

1. **अनुप्रास** - अनुप्रास शब्द का अर्थ है किसी वस्तु को अनुक्रम में रखना। जहाँ किसी वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है; जैसे—तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।

यहाँ ‘त’ वर्ण की बार-बार आवृत्ति हुई है और इससे सौंदर्य में वृद्धि हो रही है। अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है। अनुप्रास के कुछ और उदाहरण हैं—

(क) भुज भुजगेस की वै संगिनी भुजांगिनी—सी

खेदि खेदि खाती दीह दारुन दलन के।

(ख) चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही थीं जल-थल में

2. **यमक** - कविता में जहाँ एक ही शब्द एक से अधिक बार आए और हर बार उसका अर्थ भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है; जैसे-
पच्छी परछीने ऐसे परे छीने बीर।

तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के॥

यहाँ 'परछीने' तथा 'बरछीने' शब्दों का दो बार प्रयोग हुआ है और दोनों बार उनका अर्थ भिन्न-भिन्न है। अतः यहाँ यमक अलंकार है। यमक के कुछ और उदाहरण हैं-

(क) कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।

वा खाय बौराए जग या पाए बौराए

(ख) माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर।

कर का मनका डारि के, मन का मनका फेर॥

3. **श्लेष** - श्लेष शब्द का मूल अर्थ है-'चिपकना।' जहाँ एक शब्द के साथ एक से अधिक अर्थ चिपके हों, वहाँ श्लेष अलंकार होता है जैसे-

जो रहीम गति दीप की कुल कपूत गति सोय।

बारे उजियारो करै बढे अँधेरी होय॥

यहाँ 'बारे' और 'बढे' शब्द में श्ले है। क्योंकि 'बारे' का अर्थ है-1. बचपन में 2. जलाने पर। 'बढे' का अर्थ है-1. उम्र बढ़ने पर 2. बुझाने पर।

श्लेष अलंकार के अन्य उदाहरण हैं-

(क) मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोय।

जा तन की झाँई परै स्याम हरित दुति होय॥

(ख) सुवरन को ढूँढत फिरत कवि, व्यभिचारी चोर॥

अर्थालंकार

जहाँ शब्दों के अर्थ के कारण काव्य में सौंदर्य और चमत्कार पैदा हो, वहाँ अर्थालंकार होता है। कुछ प्रमुख अर्थालंकार हैं-उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण, अन्योक्ति।

1. **उपमा** - यह सादृश्यमूलक अलंकार है। किसी प्रसिद्ध वस्तु की समानता के आधार पर जब किसी वस्तु या व्यक्ति के रूप, गुण, धर्म का वर्णन किया जाता है तो वहाँ उपमा अलंकार होता है। उपमा अलंकार के चार अंग हैं-उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और वाचक शब्द।

(क) **उपमेय** : वह वस्तु या व्यक्ति जिसका वर्णन किया जाता है, उपमेय कहलाता है। इसे प्रस्तुत (विषय) भी कहते हैं। उसका मुख चंद्रमा के समान सुंदर है-इस वाक्य में 'मुख' उपमेय है।

(ख) उपमान : जिस प्रसिद्ध वस्तु या व्यक्ति के साथ उपमेय की समानता बताई जाती है उसे उपमान कहते हैं। हमें अप्रस्तुत भी कहा जाता है। ऊपर दिए गए उदाहरण में 'चंद्रमा' उपमान है।

(ग) साधारण धर्म : उपमेय और उपमान के बीच पाए जाने वाले समान रूप और गुण को साधारण धर्म कहते हैं। प्रस्तुत उदाहरण में 'सुंदर' शब्द साधारण धर्म है।

वाचक शब्द जिन शब्दों की सहायता से उपमेय और उपमान में समानता प्रकट की जाती है, वे वाचक शब्द कहलाते हैं, यथा-जैसा जैसी, जैसे, सा, सी, से, सम, समान, ज्यों, सरिस।

ऊपर दिए गए उदाहरण में 'समान' वाचक शब्द है। उपमा अलंकार के कुछ उदाहरण हैं-

(क) पीपर पात सरिस मन डोला।

(ख) यह देखिए अरविंद से शिशुवृंद कैसे सो रहे।

(ग) असंख्य कीर्ति रश्मियौ विकीर्ण दिव्य दाह-सी।

2. रूपक - जहाँ रूप और गुण की अत्यधिक समानता के कारण उपमेय में उपमान का आरोप कर अभद स्थापित किया जाए वहाँ रूपक अलंकार होता है; जैसे-

चरण कमल बंदों हरिराई।

यहाँ 'चरण' में 'कमल' से अभेद का आरोप हुआ है। रूपक के कुछ और उदाहरण हैं-

(क) बीती विभावरी जाग री!

अंबर पनघट में डुबो रही,

तारा घट उषा नागरी।

(ख) मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों

3. उत्प्रेक्षा - जहाँ रूप, गुण आदि की समानता के कारण उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना की जाए तथा उसे व्यक्त करने के लिए-मानो, मानो, ज्यों आदि का प्रयोग किया जाता है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है; जैसे-

सोहत ओढ़े पीत पट स्याम सलोने गात।

मनो नीलमणि सैल पर आतप पर्यो प्रभावत॥

यहाँ श्रीकृष्ण के श्यामल शरीर में नीलमणि पर्वत तथा पीले वस्त्रों में धूप की संभावना की गई है, अतः यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है। कुछ और उदाहरण हैं-

(क) पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।

मेघ जाए बड़े बन-ठन के सँवर के॥

(ख) उस वक्त मारे क्रोध के तनु काँपने उनका लगा।

मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा।

4. **अतिशयोक्ति** - जहाँ किसी बात को इतना बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाए अथवा किसी की प्रशंसा इतनी बढ़ा-चढ़ाकर की जाए कि वह लोक-सीमा के बाहर हो तो वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है; जैसे-

(क) जिस वीरता से शत्रुओं का सामना उसने किया।

असमर्थ हो उसके कथन में मौन वाणी ने लिया।

(ख) तारा सो तरनि धूरि धारा मैं लागत जिमि,

धारा पर पारा पारावार यों हलत है॥

5. **मानवीकरण** - जहाँ जड़ प्रकृति पर मानवीय भावनाओं तथा क्रियाओं का आरोप हो वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है; जैसे-

लो यह लतिका भी भर लाई

मधु मुकुल नवल रस गागरी।

यहाँ लतिका में मानवीय क्रियाओं का आरोप है, अतः यहाँ मानवीकरण अलंकार है। मानवीकरण के अन्य उदाहरण हैं-

(क) दिवावसान का समय

मेघमय आसमान से उतर रही

संध्या सुंदरी परी-सी धीरे-धीरे-धीरे।

(ख) मेघ आए बड़े बन उन के सँवर के।

6. **अन्योक्ति** - जहाँ उपमान (अप्रस्तुत) के वर्णन के माध्यम से उपमेय (प्रस्तुत) का वर्णन किया जाए, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। इसे अप्रस्तुत प्रशंसा भी कहा जाता है; जैसे-
जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीति बहार।

अब अलि, रही गुलाब में, अपत कँटीली डार॥

यहाँ अलि के माध्यम से एक ऐसी गुणी की ओर संकेत किया गया है, जिसका आश्रयदाता पत्रहीन शाखा-सा धनहीन हो गया है।

प्रश्न-अभ्यास

1. अलंकार किसे कहते हैं ? उसके भेद बताइए।
2. शब्दालंकार और अर्थालंकार का अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. उपमा अलंकार की परिभाषा देते हुए उसके अंग बताइए।
4. उपमा और रूपक का अंतर उदाहरण सहित समझाइए।
5. यमक और श्लेष में क्या अंतर है ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
6. अपने पुस्तक में से मानवीकरण और अतिशयोक्ति अलंकार के दो-दो उदाहरण छाँटकर लिखिए।